मन के दस कमरे

सचेत पागलपन — दृष्टि

एक ऐसा घर है जिसमें हम सब रहते हैं, बिना कभी उसे चुने।

उसका कोई पता नहीं। वह किसी नक़्शे पर नहीं मिलता। फिर भी हम उसे किसी भी सच्चे घर से बेहतर जानते हैं।

भीतर दस दरवाज़े हैं।

कुछ हम हर दिन खोलते हैं, बिना जाने।

कुछ हम बंद रखते हैं, यह दिखावा करते हुए कि उनसे हमारा कोई नाता नहीं।

और फिर कुछ कमरे ऐसे हैं जिन्हें हमने ख़ुद नहीं बनाया, फिर भी वे किसी तरह हमारे भीतर बसे रहते हैं।

यह कोई सिद्धांत नहीं है।

यह मनोविज्ञान की कोई किताब नहीं जो शेल्फ़ पर धूल खा रही हो।

यह उस आदमी का विवरण है जो इन दस कमरों में एक-एक करके चला, अक्सर यह जाने बिना कि वह कहाँ है, और जो अब, कुछ और वर्षों के बोझ के साथ, उन्हें ठीक वैसे ही बयान करने की कोशिश कर रहा है जैसे उसने उन्हें जिया।

दस दरवाज़े। मैंने सब खोले।

कुछ जिज्ञासा से। कुछ अनिच्छा से। कुछ तब जब लौटना पहले ही बहुत देर हो चुका था।

अगर ये कमरे परिचित लगें, तो यह इसलिए नहीं कि वे मेरी कहानी कहते हैं।

यह इसलिए है क्योंकि, कहीं गहरे में, वे तुम्हारी भी कहानी कहते हैं।

फर्डिनांडो

सचेत पागलपन — दृष्टि

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

एक ऐसा इलाक़ा है जिसे बहुत कम लोग पहचानते हैं। वह अफ़रा-तफ़री और स्पष्टता के बीच बसा है। घाव और समझ के बीच। ढह जाने और फिर से जन्म लेने के बीच। मैं इसे सुबोध पागलपन कहता हूँ। वहाँ कड़ियाँ दिखने लगती हैं। नक़ाब गिर जाते हैं। बारीकियाँ बोलने लगती हैं।

इसे समझाना मुश्किल है। जिन्होंने इसे कभी भोगा नहीं, वे इसे उलझन समझ बैठते हैं। सच तो इसका ठीक उल्टा है। यह हद से ज़्यादा स्पष्टता है। एक ही पल में देखी गई हद से ज़्यादा हक़ीक़त। जो सुबोध पागलपन में जीते हैं, वे भटके हुए नहीं होते। वे बस उन जगहों से गुज़र रहे होते हैं जहाँ बाक़ी लोग अभी पहुँचे तक नहीं। एक बार हम एक ग्राहक के पास गए जो कभी समय पर भुगतान नहीं करता था। उसकी देरियाँ उसे बार-बार बक़ायादारों की सूची में लौटा लातीं। यहाँ तक कि क्रेडिट मैनेजर तक इसमें उलझ गया। वह मिलान से आया था। ज़्यादा विश्लेषक। ज़्यादा तर्कशील। कम भावुक। फिर भी वह ग्राहक किसी की सुनने को तैयार न था। वक़्त बीतता गया। एक दिन मैं उससे फिर मिला। मैंने कहा: “मुबारक हो। आपका नाम अब बक़ायादारों की सूची में नहीं है। आख़िरकार आप भी सबके जैसे हो ही गए।” उसने मेरी ओर देखा। मुस्कुराया। और बोला: “मेरे प्यारे दोस्त, ज़रा फिर से देखो। अगर तुम्हें मैं दिखाई नहीं दिया, तो इसका यह मतलब नहीं कि मैं वहाँ हूँ ही नहीं।” उस पल मैंने कुछ समझा। सुबोध पागलपन उसे देखना नहीं है जो मौजूद ही नहीं है। वह उसे देखना है जो सचमुच मौजूद है, जबकि बाक़ी सब कहीं और देख रहे होते हैं।

फर्दिनांदो

 © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।